IJAER/January-February-2025/Volume-14/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research
(Peer-Reviewed, Open Access, Fully Refereed International Journal) Impact Factor:7.06

भारत के परम्परागत कालीन व गलीचे

शालिनी आल्हा
सह आचार्य
चौ. ब.रा.गो.राज.कन्या महाविद्यालय
श्रीगंगानगर

परिचय :–

ठंडे स्थानों पर फर्श को ढकने व गर्म रखने, सजावट के रूप में, सामाजिक प्रतिष्ठा, प्रार्थना व पूजा के समय कालीन व गलीचे का उपयोग किया जाता था। प्रारम्भिक काल में इन्हें बनाने के लिए घास, ऊँट व भेड़ के बाल, कपास इत्यादि रेशों का इस्तेमाल किया जाता था। जैसे–जैसे सभ्यताएँ विकसित हुई इसे बनाने की सामग्री व उपयोग करने का तरीका भी बदल गया। भारत में बनाए जाने वाले कालीन व गलीचे विविधतापूर्ण होते हैं। अलग–अलग राज्यों में बनने वाले ये सुन्दर कालीन दूसरों से भिन्न होते हैं। प्राचीन समय में हथकरघे पर कारीगरों द्वारा कड़ी मेहनत से इन्हें तैयार किया जाता था। धीरे–धीरे औद्योगिकरण के विकास के साथ मशीनों से बने उत्पाद बाजार में आए और परम्परागत स्वाद खोने लगा। परन्तु फिर भी हथकरघे पर निर्मित कालीन मशीनों से बने कालीनों से अधिक उत्तम श्रेणी के होते हैं। और लोगों द्वारा पसन्द भी किए जाते हैं। बाजार में इन्हें उचित मूल्य प्राप्त नहीं होने के कारण कारीगरों का एक बड़ा समूह इस कार्य से पीछे हटने लगा है।

मुख्य शब्दः– तालीम, कारीगर, कालीन, खारखाना, गलीचा, हथकरघा, बुनकर, बुनाई।

कालीन बुनाई वह कला है जो सैंकड़ों वर्षों से दुनिया में जीवित है। प्रारम्भिक समय में ठण्डे प्रदेशों में फर्श को गर्म रखने के लिए इसका प्रयोग किया जाता था। भारत में इसका उत्पादन 15 से 16वीं शताब्दी में माना जाता है। यद्यपि इस कला का प्रारम्भ भारत में नहीं हुआ, परन्तु एक बार भारतीयों ने इस कला को सीख लिया तो उसे अपना बना लिया। कालीन व गलीचों के विकास में राजघरानों के संरक्षण की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। पुरातन समय में जहाँ कुशल कारीगर हाथों से हथकरघे पर कालीन व गलीचे बुना करते थे। औद्योगिक क्रान्ति के कारण मशीनों पर बनने लगे। लेकिन कारीगरों के अथक प्रयासों ने इस कला को जीवित रखा और अत्यन्त खूबसूरत, अद्वितीय नमूनों व रंगों के ऐसे कालीन बनाए। जिन्होंने मशीनों से बने कालीन को पीछे छोड़ दिया। मशीन से बनने वाले कालीन हस्त निर्मित कालीन से कुछ औसत दर्जे के हो गए। भारत में अलग–अलग राज्यों में बनने वाले कालीन व गलीचों की अलग पहचान है। जो उन्हें दूसरे से अलग करती है। इसी श्रेणी में कश्मीर, उत्तरप्रदेश, राजस्थान में बनाए जाने वाले सुन्दर व उत्कृष्ट कालीन शामिल हैं।

1. **कश्मीर के कालीन :–**

भारतीय परम्परागत कालीन में सबसे उत्तम श्रेणी के कालीन कश्मीर के माने जाते हैं। ये कालीन अपने समृद्ध रंग और असाधारण गुणवत्ता के लिए विश्व प्रसिद्ध है। कश्मीर में बनने वाले शाल का कश्मीरी कालीन पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा है। इसका पता हमें इस बात से चलता है कि जिस वर्णमाला का प्रयोग कालीन बनाने के लिए बनाई गई तालीम में होता है। उसी तालीम का प्रयोग कश्मीरी शाल को बनाने में भी होता है। तालीम तैयार करने का तरीका दोनों में एक समान है। तालीम एक प्रकार का लिखित कोड है जो बुनकर कालीन डिजाइन करने के लिए बनाता है।

कश्मीरी कालीन बनाने की परम्परा 15वीं शताब्दी से शुरू हुई मानी जाती है। यह कहा जाता है कि सूफी संत सैयद अली हमदानी ने फारस के कारीगरों को कश्मीर लाकर उनके कौशल को स्थानीय लोगों में फैलाया था। मुगल काल में इस कला को और अधिक प्रोत्साहित व संरक्षित किया गया।

निर्माण प्रक्रिया :–

कालीन बनाए जाने वाले कार्य स्थल को खारखाना के नाम से जाना जाता है। कालीन में बनाए जाने वाले डिजाइन को पहले डिजाइनर द्वारा तैयार किया जाता है। इसके लिए वह तालीम तैयार करता है। तालीम एक प्रकार का लिखित कोड होता है। जिसे धागों व रंगों को चुनकर तैयार किया जाता है। यह एक प्रकार की कालीन की भाषा है जिसका पालन बुनकर कालीन बनाते समय करता है। तालीम में कालीन में बनाई जाने वाली गांठों की संख्या बताई जाती है। हर तालीम के ऊपर एक खास रंग को दर्शाने के लिए चित्र अंकित किया जाता है।

इस तैयार तालीम के साथ ही डिजाइनर द्वारा रंग संयोजन का एक शेड कार्ड भी तैयार किया जाता है। जिसमें रंगे हुए धागों के टुकड़े लगाए जाते हैं। ताकि यह बताया जा सके की किस स्थान पर कौनसा रंग प्रयोग किया जाना है। इस तरह बुनाई के कार्य में तालीम के साथ शेड कार्ड को भी साथ में रखा जाता है। बुनाई का काम दो बुनकर मिलकर करते हैं। एक तालीम पढ़ता है और दूसरा उसके अनुसार बुनाई करता है। साधारण आकार की कालीन बनाने में तालीम डिजाइनर को लगभग तीन माह का समय लग जाता है। वर्तमान में यह कार्य ग्राफ पेपर पर किया जाता है। जिससे न केवल तालीम लिखना आसान हुआ है बल्कि समय भी कम लगता है। बुनाई का कार्य गाँठें लगाते हुए किया जाता है। एक पंक्ति पूरी होने पर इसे रीड से ठोका जाता है। और एक दूसरे के पास लाया जाता है। इसके बाद पाइल के धागों को एक बराबर काटकर साफ किया जाता है। कालीन तैयार होने के बाद इसे जमीन पर फैलाकर पाइल की अंतिम कटाई व ब्रश से झाड़ा जाता है।

कालीन में बनाए जाने वाले डिजाइन :–

कश्मीरी कालीन में बहुत ही विविधता युक्त डिजाइन होते हैं, जैसे–

1. **दर्शनीय एवं चित्रात्मक :–**

यह लोकप्रिय डिजाइन है जिसमें बारीकी से बनाए हुए फूल व फूलों के पौधे, पत्तियाँ, कटावदार तने इत्यादि डिजाइन बनाए जाते हैं।

2. **उत्कृष्ट जाली या ज़ाफरी :–**

यह मुगल परम्परा की पहचान है। डिजाइन में प्रत्येक अन्त पर एक घेरे में एक फूलों वाला पौध या प्रत्येक कटाव पर एक फूल बनाया जाता है। यह जालीनुमा होता है।

3. प्राचीन पदक :–

ये बहुत प्रकार के बनाए जाते हैं। कुछ की आकृति अलग या विचित्र भी होती है। और इन्हें खासतौर पर बार्डर बनाने में इस्तेमाल किया जाता है।

कालीन के प्रकार :–

वर्तमान में भी कश्मीर में विभिन्न प्रकार के इन्डोपरशीयन व मध्य एशियाई कालीन बनाए जाते हैं। जिसके लिए सूती, ऊनी व रेशमी धागों का इस्तेमाल होता है। जैसे– बुखारा, कालहन, तर्किश कालीन, रेशमी कालीन, बारा जस्ता कालीन इत्यादि। बारा जस्ता कालीन के आधार में सुनहरी धागों का इस्तेमाल होता है। जिसके कारण पाइल के नीचे चमकदार आधार दिखाई पड़ता है।

2. उत्तरप्रदेश की कालीन :–

उत्तरप्रदेश का कालीन उद्योग प्राचीन नहीं बल्कि आधुनिक है। ब्रिटिश शासनकाल में अंग्रेजों द्वारा प्रोत्साहन मिलने पर यह उद्योग फला फूला और वर्तमान में उत्तरप्रदेश कालीन उत्पादन का मुख्य केन्द्र बन गया है। यहाँ पर देश में कुल उत्पादक का 90 प्रतिशत और बुनकरों का 75 प्रतिशत रहता है। मिर्जापुर, भदोही और खमरिया तथा उसके आसपास के 500 गाँवों में कालीन निर्माण का कार्य किया जाता है। मुगलकाल में इलाहाबाद, जोनपुर व आगरा मुख्य केन्द्र थे। वर्तमान में भदोही कालीन सिटी के नाम से जाना जाता है।

<u>डिजाइन :–</u>

निर्यात की दृष्टि से बनाए जाने वाले कालीनों में वर्तमान में लगभग सभी प्रकार के डिजाइन बनाए जाते हैं। उदाहरण के लिए ताजमहल, राजस्थान, सिरदार, कंधारी, कालाबार, फ्रेंच डिजाइन, मोहरा भुखारा, इत्यादि। सिरदार कालीन में साधारण हल्के रंगों होते हैं। और बार्डर को उभरा हुआ बनाया जाता है। कांधारी कालीन में हरे व सफेद या सुनहरा व सफेद रंग का इस्तेमाल किया जाता है। कालाबार में आभूषण के डिजाइन बनाए जाते हैं। इस प्रकार फ्रेंच डिजाइन में 18वीं शताब्दी के इमारतों के डिजाइन बनाए जाते हैं। इसके अलावा छोटे फूलों, पत्तों और अष्टभुज डिजाइन बनाए जाते हैं।

<u>निर्माण प्रक्रिया :–</u>

यहाँ बनने वाली कालीन मध्यम स्तर की होती है। कारण यह है कि इस्तेमाल होने वाले धागे कपास, ऊन व मानवकृत होते हैं। कालीन की एक वर्ग हिस्से में लगभग 60 गाँठें लगाई जाती है। जिससे निर्माण तो जल्दी होता है परन्तु स्तर कश्मीरी कालीन से कम होता है। डिजाइन ग्राफ पेपर पर बनाया जाता है। मुख्य बुनकर डिजाइन पढ़कर

बोलता है और अन्य साथी बुनकर इसके अनुसार गाँठें लगाते हुए कालीन बनाने का कार्य करते हैं। इस प्रकार एक साथ कई कालीन तैयार होते हैं।

3. आंध्रप्रदेश के कालीन :–

आंध्रप्रदेश में बनाए जाने वाले ऊनी पाइल के दो मुख्य केन्द्र हैं– एलूरू और वारांगल। ये दोनों ही कालीन आंध्रप्रदेश के गौरव कहलाते हैं। ये कालीन हस्तशिल्प के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। जिनमें परम्परागत व आधुनिक दोनों शैलियों में डिजाइन बनाए जाते हैं। कालीन बनाने के लिए कच्ची सामग्री के रूप में ऊन, रेशम व कपास के रेशे प्रयोग में लाए जाते हैं। यहाँ पर भारत फारसी कालीन तैयार किये जाते हैं। जो अरब समुदाय के लोगों के यहाँ बसने पर शुरू हुई। कालीनों में बनाए जाने वाले डिजाइन कालीन उद्योग को संरक्षित करने वाले संरक्षकों जैसे रामचन्द्र खानी, रेड्डी खानी, गोपालराव खानी इत्यादि के नाम पर रखा गया है।

(प) वारांगल के कालीन :–

यहाँ पर कालीन उद्योग को स्थानीय नवाबों द्वारा शुरू करवाया गया था। सभी बुनकर मुस्लिम थे। वारांगल के आसपास के क्षेत्र में कपास की खेती होने से यह प्रचूर मात्रा में मिल जाता था। इसलिए कालीन बुनाई में इस्तेमाल होने लगा। पाइल बनाने के लिए ऊन का रेशा उपयोग में लाया जाता है और दोनों को बाँधने के लिए जूट का प्रयोग किया जाता है। पश्चिमी देशों में इन कालीनों की अच्छी माँग है। आमतौर पर 7ग4 फीट के आकार के 1000 कालीन हर महिने निर्यात किए जाते हैं। अपने चरम बिन्दू पर यह उद्योग 500 कारीगरों को रोजगार उपलब्ध करवाता था। बाद में विदेशी माँग कम हो गई। इसका कारण जूट के स्थान पर सागरमट्टा रेशे का इस्तेमाल बताया जाता है।

डिजाइन :–

फूल पत्तियों से बने डिजाइन की माँग ज्यादा रहती है। डिजाइन के नाम संरक्षकों के नाम पर रखे गए हैं। जैसे– हाशीम खानी, दिली खानी, विरन्दा खानी, महबूब खानी, धौथी खानी इत्यादि।

निर्माण प्रक्रिया :–

बुनाई के लिए लम्बवत करघे का इस्तेमाल किया जाता है। दो से तीन फीट चौडे कालीन को बनाने के लिए एक बुनकर काम करता है। करघे को मिट्टी के छोटे गड्डे के ऊपर फिट किया जाता है। बुनाई के समय बुनकर इस प्रकार बैठता है कि उसके पैर गड्डों में रहते हैं। सबसे पहले ग्राफ पर डिजाइन बनाया जाता है और उसके अनुसार ताने के धागे करघे पर बाँधे जाते हैं। फिर उसके बाद ताने के धागों से गाँठें बाँधी जाती है। गाँठों को ताने के धागों के साथ बाँधने के लिए तीसरा धागा इस्तेमाल होता है। एक पंक्ति पूरी होने पर इसे रीड से ठोका जाता है और पाइल को काटा जाता है। कालीन पूरा होने पर करघे से उतारकर इसे आखरी सफाई करते हुए पाइल को काटना व ब्रश से साफ करने का काम किया जाता है।

(पप) एलुरू के कालीन :–

आंध्रप्रदेश के एलुरू जिले में यह पारम्परिक कालीन बनाए जाते हैं। ये अपने डिजाइन रंगों व गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध हैं। इन्हें बनाने के लिए ऊन, कपास व रेशम के धागों का उपयोग किया जाता है। विभिन्न रंगों जैसे– लाल, नीला, हरा, पीला इत्यादि में बनाए जाते हैं। साथ ही इनमें पारम्परिक डिजाइन जैसे– फूल, पत्तियाँ और ज्यमीतिय आकार होते हैं। धागों को रंगने के लिए प्राकृतिक और कृत्रिम दोनों ही प्रकार के रंग इस्तेमाल होते हैं। निर्माण प्रक्रिया हथकरघे पर होती है। बुनकर द्वारा ग्राफ पेपर पर बने डिजाइन के अनुसार कालीन को बुना जाता है। अंतिम आकार देते हुए कालीन तैयार किए जाते हैं।

4. राजस्थान के कालीन :–

राजस्थान के कालीनों के इतिहास देखें तो जयपुर एक समय में इसके लिए विश्व प्रसिद्ध था। परन्तु वर्तमान में ऐसा नहीं है। राजस्थान में अजमेर, बीकानेर, बाड़मेर व जैसलमेर में कालीन बनाए जाते हैं। राजस्थान की समृद्ध संस्कृति में कालीन व गलीचे परम्परा व शिल्प कौशल के सुन्दर उदाहरण हैं। ये राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग रहे हैं। जो शाही दरबारों से शुरू हुआ था। ऐतिहासिक रूप से ये राजपूत शासकों के महलों की शोभा बढ़ाते थे। ये कालीन कलात्मक उत्कृष्टता व विलासिता के प्रतीक माने जाते थे। शाही घरानों द्वारा इस कला को संरक्षित किया गया। इस प्रकार यह परम्परा विकसित हुई। एक पीढ़ी अगली पीढ़ी को कला की तकनीक व डिजाइन हस्तान्तरित करती है। जिससे अभिव्यक्ति के इस उत्कृष्ट रूप की निरन्तरता सुनिश्चित हुई है। राजस्थान में अलग–अलग स्थान पर बनने वाले कालीन व गलीचे अलग–अलग ऐतिहासिक कहानियाँ दर्शाते हैं। प्रत्येक पैटर्न, रंग व आकृति उस क्षेत्र की पौराणिकता प्रदर्शित करती है।

<u>निर्माण प्रक्रिया :–</u>

कालीन बनाने के लिए ऊन रेशम व कपास के धागे काम में लाए जाते हैं। अन्य कालीन की तरह इसे भी गाँठें लगाते हुए तैयार किया जाता है। गाँठों का घनत्व एवं जटिलता इसकी गुणवत्ता और डिजाइन पर निर्भर करता है। डिजाइन के अनुसार ताने के धागे करघे पर बाँधे जाते हैं। फिर इन पर गाँठों से जटिल पैटर्न बनाए जाते हैं। राजस्थान की संस्कृति में रंगों का अत्यन्त महत्त्व है। इसलिए कारीगर वनस्पतिक, खनिज व प्राणिज चटक रंगों का उपयोग धागों को रंगने के लिए करते हैं। प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल करते हुए यह प्रक्रिया ना केवल सुन्दर उत्पाद बनाती है बल्कि पर्यावरण के अनुकूल और टिकाऊपन को भी सुनिश्चित करती है।

<u>राजस्थान में बनने वाले कालीन :–</u>

यह अपने जटिल पैटर्न और चमकीले रंग के लिए प्रसिद्ध है। इनमें फूल, ज्यमितिय पैटर्न बनाए जाते हैं। इस पर बनने वाले डिजाइन इस क्षेत्र की सुन्दरता को दर्शाते हैं।

बीकानेर कालीन :–

इन कालीन में रेगिस्तान के शुष्क परिदृश्य से प्रेरित डिजाइन देखे जाते हैं। डिजाइन में रेगिस्तानी जीवन को दर्शाने वाले तत्त्व शामिल होते हैं। जैसे मिट्टी के रंग, रेत और टीले इत्यादि।

जोधपुर कालीन :–

जोधपुर के कालीन राजसी व शाही डिजाइन के लिए मशहूर है। ये शाही अतीत से प्रभावित है। जिसमें कलात्मकता, जटिल पैटर्न व भव्य बनावट स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

5. पंजाब के कालीन :–

पंजाब में 19वीं शताब्दी में अमृतसर में कालीन बुनाई का कार्य शुरू हुआ। उस समय महाराजा रणजीत सिंह कश्मीर से बुनकर यहाँ लेकर आए और हाथ से बुने हुए कालीनों का निर्माण सुनिश्चित किया। फारसी गाँठ तकनीक का उपयोग करते हुए कारीगर/बुनकर कपास के ताने पर ऊन लपेटते थे। यह तकनीक बोखारा कालीन से मिलती जुलती है। इसके डिजाइन पहले ग्राफ पर बनते हैं फिर इससे कालीन बुने जाते हैं। इस कला में लगातार गिरावट आ रही है। क्योंकि नक्शा पैटर्न बनाने वाले डिजाइनर नहीं बचे हैं। स्थानीय बाजार में ग्राहक नहीं होने और केवल निर्यात की दृष्टि से निर्माण के कारण, साथ ही बिचौलियों के होने से बुनकरों की कमाई बहुत कम हो गई है।

निष्कर्ष :–

भारत में परम्परागत रूप से बहुत से कालीन व गलीचे बनाए जाते थे। इनके डिजाइन भी अत्यन्त प्राचीन व जटिल थे। वर्तमान में पारम्परिक कालीनों के केन्द्र सीमित हो गए हैं। फिर भी संरक्षकों और कारीगरों के द्वारा यह कोशिश की जाती है कि वे कालीन के परम्परागत डिजाइन को सुरक्षित रख सकें। यद्यपि हथरकरघे पर बने कालीनों का स्थान मशीन पर बने कालीन व गलीचे ले रहे हैं, फिर भी परम्परागत शैली से बने कालीन वर्तमान में भी लोगों द्वारा पसन्द किए जा रहे हैं।

सन्दर्भ सूची :–

1- Middleton Andrew, Rugs and Carpets Techniques, Traditions and Designs, Mitchell Beazley.

2- Pandle, Promil, Elear Covering from Kashmir, Niyogi Books.

3- John Gillow and Nicholar Barhard, Indian Textiles, Thames and Hudson Publications.

4- Mathur Asharani, Indian Carpets, A Hand-khotted Heritage, Rupa Publication Pvt. Ltd., 2004.

5- Westborg Jon, Of Indian Carpts and Carpetwallahs, Aleph Book Company